

चित्र जल्दी में नहीं बनते हैं। धैर्य और प्रतीक्षा आवश्यक है। अनुकूल क्षण, सहज, जन्मगत वातावरण, अन्तर्बोध केवल श्रम से नहीं मिलते हैं। सृष्टि-विधि ही सर्वश्रेष्ठ है। रचनात्मक क्रियाओं में दिव्य, उत्कृष्ट और शक्तिशाली आन्तरिक प्रेरणाएँ सक्रिय हैं। इस विराट् ब्रह्माण्ड में बुद्धि, तर्क, तुच्छ हैं। मनसा प्रत्यक्षता परम बोध है। कार्य आधार है। विचार शक्ति मानव जाति की विशेषता है, हमारा बहुमूल्य साधन है, पर हमें समझना है कि और भी शक्तियाँ सहायक हैं जिनका अभी हमें पूरा ज्ञान नहीं। जीवन में या चित्र रचना में हम सोचना तो कभी बन्द नहीं करते किन्तु यह प्रक्रिया तभी अधिक सफल लगती है जब चित्र नहीं बनते हैं या जब हम दूसरे चित्रकारों की कृतियाँ देखते हैं और उन्हें समझना चाहते हैं।

सोचते-सोचते, मैंने सोचा कि शब्दों का संसार तो और भी कठिनाइयों से भरा होगा। कविता को हम न देख सकते हैं न छू सकते हैं। फिर भी विचार शक्तियाँ शताब्दियों से कविता का सहारा ले रही हैं। कवि मानवीय कल्पनाओं का सम्राट है, शब्दों का स्वामी, मार्ग-दर्शक, समृद्ध मनुष्य की जिसने अस्तित्व को समझा है और कुछ ही शब्दों में तात्त्विक अनुभवों और अहसासों को रूपायित किया है। देश में कविता का प्रेम तो हमें बचपन से ही मिला है, जीवित परम्परा की बहुमूल्य सम्पत्ति की तरह। और आज भी मेरे लिए परदेस में हिन्दी कविता पढ़ना या संगीत सुनना एक सुखद अनुभूति है।

क्या आज मैं पूछूँगा अतिथि कवि से, कुछ प्रश्न, उन समस्याओं के बारे में, जिनका मेरे पास जवाब नहीं, उन हिन्दी शब्दों का अर्थ, वे दोहे जिन्हें मैं भूल रहा हूँ, पर जिनकी गूँज अभी तक अविकल है। क्यों वे खुद बताएँगे इस असफल चित्र को देखकर कि कविता लिखने में वही निराशा, वही पीड़ा, वही सुख है और उन्हीं खतरों का सामना करना पड़ता है। क्या मैं कहूँगा कि चित्रकार गुँगा होता है, क्या वे जवाब देंगे कि कवि अन्धा होता है, अन्तर-ज्योति के बावजूद। सालों सक्रिय होते हुए भी, मैं खुद नहीं समझ सका हूँ कि कैसे, किस जुनून में चित्र बनते हैं, चित्रकला क्या है। अगर एक ऐसा दिन आये और मुझे यह समझ मिल सके, तो शायद मैं चित्र बना ही न सकूँगा। एक संगीतज्ञ की तरह मैं अपने उन चित्रों के बारे में जहाँ चित्रता सम्पूर्ण हो सकी है, केवल यही कहूँगा, 'यह भगवान की कृपा है।' एलोरा की गुफाओं में एक शिल्पकार ने बड़ी ज्ञान शक्ति से लिखा है : 'एतन्मयां कृतम् हो कृतमित्यकस्मात् ।'

नहीं, बेहतर यही है, मैं कुछ नहीं पूछूँगा। कला के बारे में प्रश्न आक्रमण के समान लगते हैं। हमारे व्यक्तिगत गुप्त और एकान्त क्षेत्रों में जहाँ हम खुद न पहुँच सकें, जिनकी अभी तक हमें खुद पहचान नहीं है, हम दर्शकों को किस तरह ले जा सकेंगे। हम किस तरह समझाएँ उन समस्याओं को जिन्हें हम खुद नहीं समझ पाते। ये बातें तो इरफानियों की महफिलों में ही बड़ी शान से हो सकती हैं, आलोचकों और समीक्षकों के बीच। मैं विनयशील होकर यही कहूँगा : 'मेरे लिये सक्रिय रहना ही काफी है।'

सुनिश्चित समय पर अतिथि कवि घर आये। पहचान, बातचीत, बच्चों की दुनिया में प्रवेश। पैरिस की जिन्दगी, हमारी पुरानी इमारत का इतिहास, देश के समाचार। कुछ ही समय बाद हमें ऐसा लगा, जैसे हम जानते हैं एक दूसरे को सालों से।

पहले मैंने बताया बिगड़ा हुआ चित्र। फिर और दूसरे बने हुए। वह भी जिस पर मैंने लिखा था, 'हमें खामोश रहना सीखना है....' देर तक वे चित्र को देखते रहे बिना प्रश्न पूछे। अब तक तो मैं शान्त हो गया था, इच्छा

थी कविता सुनने की। इन्होंने पेश की एक पोथी, जिसमें इन्होंने खुद लाल और काली स्याही से अपनी कविताएँ लिखी थीं। देर तक हम कविता सुनते रहे। चित्रों ने भी सुख-शान्ति से साथ दिया। खाने के बाद, विदा लेने के पहले मैंने कुछ कविताएँ लिख लीं। एक आखिरी पंक्ति थी :

एक दिन बच्चों की बेखौफ हँसी होगी / बिल्कुल / बच्चों की बेखौफ हँसी की तरह।
दूसरे दिन न जाने किस तरह, बड़ी सरलता से चित्र बन गया। •

2

अमानवीकरण के खिलाफ तीव्र प्रतिक्रिया कृंवर नारायण

इधर एक दो वर्षों में इतने काव्य संग्रहों का प्रकाशित होना यह तो सिद्ध करता ही है कि पिछले वर्षों में कविता का पढ़ा जाना भले ही कम हुआ हो पर उसका लिखा जाना कम नहीं हुआ शायद बढ़ा ही होगा। प्रकाशन का अलग तर्क होता है* और कविता के लिखे जाने का बिल्कुल अलग। वह आदमी के स्वभाव में होती है : इसीलिए आज भी ऐसा कुछ नहीं है जो उसके जीवन में कविता की जगह का ले सके। आर्थिक आकर्षण अच्छी कविता को न तो बहुत प्रोत्साहित ही कर पाते हैं न विपरीत परिस्थितियाँ उसे नष्ट ही। इसीलिए अक्सर वह परेशान, प्रतिकूल और असुरक्षित समयों में भी सशक्त अभिव्यक्ति का साधन रही है। समय के साथ कविता बदलती है समाप्त नहीं हो जाती और इस बदलाव को आज की महत्वपूर्ण कविताओं में स्पष्ट महसूस किया जा सकता है।

अमानवीकरण की समस्या आज जितनी जटिल है उसका हल उतना आसान नहीं है जितना कुछ आदर्शवादी मान लेते हैं। यह सरलीकरण भी एक तरह का पलायन है उन समस्याओं से जिन्हें सचाई से समझना अक्सर हमें अपने विश्वासों के बावजूद भी वेहद बेचैन कर दे सकता है। इस तरह की कविता जो आज की दुनिया में आदमी की स्थिति को बिल्कुल वेलोस और निष्पक्ष होकर चित्रित करती है हमें आश्चर्य ही नहीं एक खास तरह से विचलित भी करेगी।

* अभी हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार ने साहित्यिक पुस्तकों की खरीद का जो निर्णय लिया है उसने प्रकाशकों को कविता पुस्तक छापने के लिए उत्साहित किया है। इससे अनेक काव्य-संग्रह जो सामान्यतः न छप पाते अब छप सके हैं। इनमें सभी काव्य-संग्रह उच्च कोटि के हों जरूरी नहीं : लेकिन इस खरीद से पहले प्रकाशकीय स्थिति यह थी कि अक्सर उच्च कोटि के संग्रहों का भी छपना मुश्किल था। इससे यह बेहतर है कि अच्छे के साथ कम अच्छा साहित्य भी छप जाये, बजाय इसके कि बिकाऊ साहित्य ही छप सके। इससे अच्छे दूरे साहित्य के बीच विवेक की संभावना साहित्यिक स्तर पर बनती है, प्रकाशन के स्तर पर ही रद्द नहीं हो जाती। कौन सा साहित्य छपे और कौन सा नहीं इसका फैसला सरकारी दृष्टि से हो यह बहुत अच्छा विकल्प तो नहीं है, फिर भी इससे बेहतर विकल्प जरूर है कि यह फैसला बिल्कुल व्यावसायिक दृष्टि से हो। सरकारी मदद की वजह से जरूरत से ज्यादा काव्य संकलनों के छप जाने में, मैं वैसा कोई खतरा नहीं देखता जैसा जरूरत से ज्यादा ऐसी तमाम चीजों के छपने में देख रहा हूँ जिनसे आज समाज और साहित्य दोनों को नुकसान पहुँच रहा है।

कविता मानवीय मूल्यों का पक्ष है और किसी भी तरह के अमानवीकरण के खिलाफ तीव्र प्रतिक्रिया, चाहे वह सामाजिक और व्यावसायिक अनैतिकता हो चाहे, व्यवस्था की हृदयहीन जकड़। यह चिन्ता एक खास तरह से आज की कविता की जिम्मेदारियों और सम्भावनाओं को बढ़ाती भी है।

कविता आज सिर्फ बुनियादी आवेगों (प्राइमरी पैशन्स) की कविता नहीं रह गयी है : इस माने में वह कम से कम एक तह और ज्यादा गहरी तो हुई ही है कि वह बुनियादी आवेगों के प्रति भी सचेत और सतर्क है। यह शिकायत कि आज की कविता अतिबौद्धिक है और सहज बोधगम्य नहीं एक हद तक जायज होते हुए भी उतनी जायज नहीं जितनी यह शिकायत कि आज बहुत सी सहज ही बोधगम्य कविता प्रासंगिक नहीं। आज कविता के लिए सिर्फ महसूस करना काफी नहीं, महसूस किये हुए को और महसूस करते हुए को सोचना समझना भी जरूरी है। विचारशीलता आधुनिक संवेदना का अनिवार्य हिस्सा है और एक जरूरी यकीन भी है कि अगर अकल आदमी की दुश्मन नहीं तो अकल कविता की भी दुश्मन नहीं हो सकती। इस सदी के प्रमुख विचारक आर चिन्तक मार्क्स, फ्रायड, आइन्स्टाइन, सार्त्र आदि अमानव नहीं थे, न ही उनका लेखन और चिन्तन कविदृष्टि-विहीन है। आज अधिकांश जो कुछ भयानक और अनचाहा हमारे जीवन में हो जाता है उसकी जड़ में बौद्धिकता नहीं मूल्यता होती है—मूल्यतापूर्ण उत्तेजनाएँ और अपने तत्काल स्वार्थ से आगे न सोच पाने की बौद्धिक असमर्थताएँ। विचार-सम्पन्नता अकाव्यात्मक नहीं— उस कवित्व का आधार है जो हम उपनिषदों, गीता, कबीर, गालिल आदि में पाते हैं। मैं यहाँ छद्म-बौद्धिकता या अतिबौद्धिकता की बात नहीं कर रहा। एक कविता में विचारों और भावनाओं की आपेक्षिक स्थितियाँ, उनके सही या गलत या कमजोर अर्थ-विन्यास पर गुणात्मक असर डालती हैं। अगर एक कवि के स्वभाव में यह आवश्यक संतुलन नहीं है कि वह कविता में विचारों के देवावों और आग्रहों को किस तरह उभारे और सुरक्षित रखे तो ज्यादा संभावना यही है कि वह उन्हें अपने उद्गारों या भावनाओं द्वारा ऊपर से चमका-दमका (ग्लेमराइज) करके रह जाएगा, हमें उनके भीतरों तर्क की शक्ति और अनुभूति तक नहीं पहुँचा पाएगा। जो कवि इस ओर पूरी तरह सचेत है कि विचारशीलता और भावनाएँ आदमी की दो भिन्न प्रकार की (विरोधी प्रकार की नहीं) क्षमताएँ हैं उसकी कविताओं में हम एक खास तरह का विचारों का उदात्तीकरण पाएँगे, मात्र उनका उद्दीपन नहीं।

राजनीति का गलत सही गहरा प्रभाव कविता पर भी पड़ता रहा है। स्वतंत्रता के बाद से भारतीय जीवन और साहित्य में राजनीति का हस्तक्षेप तेजी से बढ़ा है : राजनीतिक चिन्तन का नहीं, चिन्तनरहित राजनीति का— और यह एक खास माने में साहित्य के लिए चिन्ता का कारण है। योरपीय राजनीति वहाँ के साहित्य के साथ जितनी गहराई से जुड़ी है उससे कहीं ज्यादा गहराई से वह वहाँ के गैर साहित्यिक विचारकों के साथ जुड़ी रही है। यूरोप में (अकेले वामपन्थी चिन्तन को ही सोचें तो) मार्क्स के बाद मार्क्सवाद के पक्ष-विपक्ष में सोचने वाले सशक्त विचारकों की एक लम्बी परम्परा है जिसका चिन्तन और साहित्य के साथ संवाद साहित्य को अनेक स्तरों पर प्रभावित करता रहा है। लुकाच, गोलडमान, फिशर आदि का पूरा चिन्तन साहित्यिक उदाहरणों से भरा पड़ा है। ऐसी कोई स्थिति भारतीय संदर्भ में नहीं बनती यहाँ तक कि आज गाँधीवादी या समाजवादी या मार्क्सवादी विचारधाराओं और उनकी राजनीति के बीच फर्क करना ही मुश्किल हो गया है। इसीलिए शायद पिछले वर्षों में अधिकांश हिन्दी कविता भारतीय राजनीतिक यथार्थ को लेकर उग्र और व्यग्र ही ज्यादा रही, विचारशील कम।

इधर जो हिन्दी कविता लिखी जा रही है वह लगता है समकालीन जीवन के ज्यादा पक्षों को छू सकने में सक्षम है और उसकी भाषा निश्चित रूप से विस्तृत और अनेक रूप हुई है। कई संग्रह अपनी तरह और अपनी शर्तों पर समझे जाने का निश्चित कारण सामने रखते हैं, साथ ही पीढ़ियों के अन्तर एक खास तरह बिल्कुल कविता की जमीन पर तय (रिज़ाल्ट) होते हैं। कई कवि जो पहले से लिखते रहे हैं उनकी अनेक कविताओं में एक सुखद ताजगी और नयापन है—वे आज के मन्दर्भ में चुक गये नहीं लगते ! ठीक उसी तरह इधर के कवि हैं जिनकी कविताओं में नये का कच्चा उतावलापन नहीं एक प्रौढ़ विवेक और अनुशासन है। समग्रता में लें तो विभिन्नताओं के बावजूद प्रमुखतः अच्छी कविता के लिए उनकी चिन्ता ही कहीं उन्हें शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से सहयात्री बनाती है। जो संकलन कमजोर हैं वे कविता की दृष्टि से ही कमजोर ठहरते हैं—कोई वैचारिक आग्रह उन्हें न तो ऊपर उठा पाता है न

पूर्वग्रह

आलोचना द्वै मासिक

प्रिय.....

पूर्वग्रह के अंक 39-40 में आप का लेख / समीक्षा / कविता/चित्र.....

प्रकाशित हो चुका / चुकी है। इसके ऑफ प्रिन्ट्स और पूर्वग्रह की प्रति आपके संग्रह और अवलोकन के लिए भेजी जा रही है।

आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

साभार,

आपका

अशोक वाजपेयी

सम्पादक

मध्यप्रदेश कला परिषद्, टैगोर मार्ग, भोपाल-462003 फोन 63782

जायका क्रमांक..... 28-4 89
दिनांक..... 25-9-89

पूर्वग्रह

मध्यप्रदेश कला परिषद्
सलित कला भवन, टैगोर मार्ग,
भोपाल- 462003

क्रमांक

दिनांक

श्री...सैयद...हैदर...रजा...
.....

पारिश्रमिक की अग्रिम रसीद

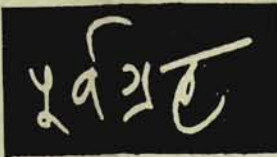
महोदय, 39-40

पूर्वग्रह के.....अंक में आपकी रचना...कुछ...संके...विविध...के...
...करे...में.....प्रकाशित हुई है. इस रचना का पारिश्रमिक...100/-
(रूपये एक सौ.....)आपको शीघ्र ही भेजा जा रहा है. आपसे आग्रह है कि
आप संलग्न रसीद पर रसीदी टिकट लगाकर तथा हस्ताक्षर कर हमें शीघ्र भेजने का
कष्ट करें, ताकि आपको पारिश्रमिक भेजा जा सके.

साभार
भवदीय

संलग्न
पावती

प्रकाशन अधिकारी



प्रकाशित रचनाओं के पारिश्रमिक की
अग्रिम रसीद

पूर्वग्रह के अंक में प्रकाशित रचना.....
.....के लिये पारिश्रमिक.....रुपये.....

(शब्दों में.....) प्राप्त हुआ. धन्यवाद.

रसीदी टिकट

लेखक के हस्ताक्षर

दिनांक..... नाम और पता.....
.....

~~पूर्वग्रह का वार्षिक शुल्क २०.०० (बीस रुपये) काटकर शेष राशि भेज दीजिए.~~

(लेखक के हस्ताक्षर)

कार्यालय के लिये

टीप:

रुपये (शब्दों में.....)

केवल भुगतान के लिए स्वीकार किये जाएं.

लेखापाल

प्रकाशन अधिकारी

भुगतान के लिये रुपये

स्वीकृत. दिनांक

सचिव

नकद

मनीआर्डर

धनादेश

क्रमांक

दिनांक

द्वारा रुपये

का भुगतान किया गया.

लेखापाल